तीन जेठ एगारहम माघ

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-८८-४

दाम : २०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१३

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),

मो.- 09572450405, 09931654742

Teen Jeth Egarham Magh : Anthology of Maithili Songs by Jagdish Prasad Mandal.



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३ ई.मे) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३ ई.मे) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३ ई.मे)

विहनि कथा संग्रह : (१) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह। पहिल संस्करण-२०१० तथा दोसर २०१३), (२) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३ ई.मे)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३ ई.मे)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३ ई.मे)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३ ई.मे)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३ ई.मे)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

एकसत्तरि-

३०. खट-मीठ ....
३१. झोंकमे ....
३२. पबिते पैग ....
३३. हेल-मेल जाधरि ....
३४. कौशल जखनि ....
३५. उमकीमे उमकि ....
३६. जिनगीक कुन्ज ....
३७. सत-चित ....
३८. पड़िते पएर ....
३९. अहाँ किए ....
४०. घट-घट घोंट ....
४१. जहिना बारह ....
४२. दुनियाँ घोड़ाएल ....
४३. बहलि बहील ....
४४. हलचल जिनगी ....
४५. टकटक ताक ....
४६. भीख मांगि ....
४७. बकरी खुट्टी ....
४८. अमरा अँचार ....
४९. घरे-घरे ....
५०. बेटी किए ....
५१. मनक भाव ....
५२. सिरजन सिर ....
५३. दूधक भूखल ....
५४. मारी-बेमारी ....

गाछक रंग बदलि...

गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग सुधरि रहल छै।

थल-कमल जकाँ कहियो
गाढ़-लाल-उज्जर बनै छै।
तहिना फूल-फल कोढ़ी जकाँ
झरि-झरि कोनो फलो बनै छै।
गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग...।

आशा आश लगा-लगा
जीत अपराजित बनैत रहै छै।
सुधरि रूप बदलि चालि
कारी काजर चमकि उठै छै।
गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग...।

लत्ती पानि रूप बदलि
थल-कमल बनैत रहै छै
तहिना लत्ती अपराजित
गाछ बनि गछाड़ि धड़ै छै।
गाछक रंग बदलि रहल छै
मौसम संग...।


मुँहक हँसी केहेन...

मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप देखैत चलियौ।
छाती केना दलकि रहल छै
सूर-तान भजैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप...।

जिनगी जेकर जेहेन रहै छै
छाती तेहने गनैत चलियौ।
हलसि-कलशि कहैत रहै छै
ऐना पारदर्शी बनैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप...।

जखने पालिस शीशा लगतै
झल अन्हार गनैत चलियौ।
झल अन्हार अन्हार बदलि
एक्कभग्गू इजोत देखैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप...।

देखि-देखि ओ सुनि-सुनि कऽ
हँसैत डेग उठबैत चलियौ।
मुँहक हँसी केहेन अबै छै
ठोरक रूप देखैत चलियौ।
मुँहक हँसी...।
❍

झोंक जुआनी झोंकए...

झोंक जुआनी झोंकए लगै छै
उष्मा पाबि उमसए लगै छै।
झोंक जुआनी...।

जाधरि सिर सृजै शिशिर छै
हार-मासु सिहरैत रहै छै।
सुनिते कोइली कुहुकि वसंती
भन-भन मन तन तनए लगै छै।
भन-भन मन तन तनए लगै छै।
झोंक जुआनी...।

रंग-विरंगक वन-उपवनमे
रंग-रंग फूल फूलए लगै छै
पाबि रस मधुमाछी सिरजि
बीख रंग चुभकए लगै छै।
बीख रंग चुभकए लगै छै।
झोंक जुआनी...।

बैसले-बैसल नाचि...

बैसले-बैसल नाचि रहल छै
गुड़-चाउर मन फाँकि रहल छै।
सिसकैत-सिहरैत कतौ देखि
संग मिलि कऽ कानि रहल छै।
संग मिलि कऽ कानि रहल छै।
गुड़-चाउर...।

उधि उधियाइत धार देखि
संग मिलि कऽ दाबि रहल छै।
घट-घट घटिया घाट बना
मरघट घाट घटाबै छै।
मरघट घाट घटाबै छै।
गुड़-चाउर...।

ने जीवै छी ने मरै छै
घोंटे-घोंटे पानि पीबै छै।
घेँट-घेँट घटि घटिया
सूखि-सुखा सुख पाबै छै।
सूखि-सुखा सुख पाबै छै।
गुड़-चाउर...।

कते जीवै छै कते मरै छै
कनिको ने बूझि पाबै छै।
असगर फुसिए बरसपतिया
फोड़ि-फोड़ि मुँह बाजै छै।
फोड़ि-फोड़ि मुँह बाजै छै।
गुड़-चाउर...।
❍

गुमकीमे बौआए...

गुमकीमे गुमका रहल छै।
औला-बौला टौला रहल छै।
गुमकीमे...।

घाम-पसिना बहि रहल छै
आश-निराश चलि रहल छै।
धक्कम-धुक्कम जगि रहल छै
औलाइत-बौलाइत मन कहै छै।
गुमकीमे...।

कखनो अन्हर-बिहारि देखै छै
झाँट-पानि बिच पड़ए लगै छै।
मुदा, तैयो मन ममोरि
अशिया आस लगा रहल छै।
गुमकीमे.....।

जखने मन विसवास उठए
इजोत जोत पाबए लगै छै।
पबिते जोत जोति जोतिया
बनि खेत उपजए लगै छै।
बनि खेत उपजए लगै छै।
गुमकीमे.....।
❍

भूत बनि भुतियाएल...

भूत बनि भुतियाएल छी
मित यौ बनि भूत भुतियाएल छी।

संगे-संग जगलौं
संगे-संग उठलौं
संगे-संग चालि चलि
संगे रहि हराएल छी।
संगिया मरि गेल
हम भुतियाएल छी।

केकरा कहबै भूत भविष्य
वर्त्तमान छिड़ियाएल छी।
रग्गर बिच फक्कर बनि
लाजे-पड़ाएल छी।
भूत बनि भुतियाएल छी।
बनि भूत भुतियाएल छी।

छोर एक भूत-भुतिया
दोसर भविस मराएल छी।
आगू-पाछू नेनसुन
वर्तमान वर्तमान पड़ाएल छी।
मीत यौ, वर्तमान हराएल अछि।
भूत बनि भुतियाएल छी।
❍

सुखले मे सभ...

सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै
मुँह-कान सभ तोड़ि रहल छै।
सुखलेमे सभ पिछड़ि रहल छै।

सूखल जानि जेतए पएर रोपै
काह-कूह सभ तेतए जमल छै।
सुखलेमे सभ.....।

सूखल धरती जेतए पड़ल छै
झल-फल नजरि तेतए तकै छै।
झलफल झल-अन्हार बनि
झलझलाएल महजाल फेकै छै।
झलझलाएल महजाल फेकै छै।
सुखलेमे सभ...।

अन्हर जाल फरिच्छ मानि
भोर भुरुकबा सुर्ज कहै छै।
अनहा सागर ओन्ह-ओन्हि
भवसागर सागर पाड़ करै छै।
भवसागर सागर पाड़ करै छै।
सुखले मे सभ...।


दीनक दिन केना...

दीनक दिन केना कऽ चढ़तै
मन कहाँ कहियो मानै छै।
रतुके काजे दिनो गमा कऽ
बढ़ती कहाँ तानि पाबै छै।
बढ़ती कहाँ तानि पाबै छै।
दीनक दिन केना.....।

बिनु तनने घोकचि-मोकचि जौं
जाड़ माघ आबैत रहै छै।
चैतक चेत चेतौनी ओहिना
सिर जेठ जारैत रहै छै।
सिर जेठ जारैत रहै छै।
दीनक दिन केना.....।

तीन जेठ एगारहम माघ
तीनू लोक देखैत सुनै छै।
देह-पसेना सुरकि चाटि कऽ
माघे ने माघो कहबै छै।
माघे ने माघो कहबै छै।
दीनक दिन केना.....।
❍

कोढ़ पकड़ि...

कोढ़ पकड़ि कोढ़ी कहै छै
कोंढ़िया कोढ़ पकड़ने छै।

केना कऽ फड़बै-फुलेबै
रेहे-देह पकड़ने छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

देखलोसँ नहि देखि पड़ै छै
सुनलोसँ नहि सुनि पबै छै।
टीश-पीड़ा टीशा पीड़ा
घोर-घोर मन बनौने छै।
घोर-घोर मन बनौने छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

नहि कहियो फड़बै-फुलेबै
झखि-झखि आशा तोड़ने छै।
सकारथ अकारथ बनि-बनि
दीन राति झहरैत रहै छै।
दीन राति झहरैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि.....।

फड़ैसँ पहिने फुलहरि
सूखि-सूखि धरती धड़ैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि कोढ़ी-कोढ़िया
राति-दिन सुनैत रहै छै।
राति-दिन सुनैत रहै छै।
कोढ़ पकड़ि...।
❍

जाल समाज...

जाल समाज महजाल बनल छै
हाना बनि परिवार सजल छै।
जाल समाज महजाल बनल छै।

बिनु नापे हाना बन बना
हाना बीच खाना सजल छै।
हाना बूझि खाना लपकि
खानामे जा-जा फँसै छै।
खानामे जा-जा फँसै छै।
मीत यौ, जाल समाज.....।

जान गमौनाइ खेल खेलि
बँचैक कहाँ उपाए करै छै
ऊपर कूदि-कूदि फानि चाहि
गोर गोरिया गुहारि करै छै।
मीत यौ, जाल समाज.....।

जालो रूप अदलि-बदलि
कखनो शब्द भवजाल कहै छै।
भवजाल घुरिया-घुरिया
डूमि-डूमि भवसागर मरै छै।
डूमि-डूमि भवसागर मरै छै।
जाल समाज.....।


मीत यौ, देहक पानि...

मीत यौ, देहक पानि तखनि फुलाइ छै
कोढ़ी बनि काज रूप लगै छै।
देहक पानि तखनि फुलाइ छै।

कोढ़ीए ने फुलो-फड़ो संग
बाँहि पकड़ि संकल्प कुदै छै।
देहक पानि.....।

जाधरि मन संकल्पित नहि
ताबे केना उद्देश्य कहबै छै
संकल्पे ने तन-मन बीच
सीमा दइत डेग बढ़बै छै।
सीमा दइत डेग बढ़बै छै।
मीत यौ, देहक पानि.....।

काम-धाम जहिना बनै छै
तहिना ने कर्मो-धर्म कहबै छै
धर्मे ने धारण करैत
पथ-पानि चढ़बैत चलै छै।
मीत यौ, देहक पानि.....।

जेहेन पथ-पानि भेटै छै
तेहने जिनगी हँसि चलै छै।
हँसि-हँसि हँसिया-हँसिया
सौन पूनो चान कहै छै।
सौन पूनो चान कहै छै।
देहक पानि.....।
❍

आश प्रेम संग...

आश प्रेम संग झूमि रहल छै
लाल टमाटर चूमि रहल छै।
आश प्रेम...।

पथ बीच सन्यासी जहिना
झींक दऽ दऽ जाँत भरै छै।
आस कहाँ संग छोड़ैए
चिक्कस बनि-बनि भूमि भरै छै।
चिक्कस बनि-बनि भूमि भरै छै।
आश प्रेम...।

लाल टमाटर बनि सन्यासी
खटमीठ रूप धड़ैत रहै छै।
नै मीठ तँ खट्टो नहियेँ
अपन नाव हेला हेलै छै।
अपन नाव हेला हेलै छै।
आश प्रेम...।

गीत गीता गाबि सन्यासी
भगवत भजन करैत रहै छै।
सबूर पाबि सबर सबरी
मरितो राम एबे करै छै।
मरितो राम एबे करै छै।
आश प्रेम संग...।
❍

विषय दस...

विषय दस सिलेबस प्रवेश
दसो दिशा देखैत रहै छै।
तीन भूज जियामिती तहिना
गीत व्यास गबैत रहै छै।
गीत व्यास गबैत रहै छै।
दसो दिशा...।

सून अप्पन हिस्सा कहि-कहि
ठेहुन रोपि अड़ल रहै छै।
अंकसँ हिसाबो तेहने
रथ जिनगी घिचैत चलै छै।
रथ जिनगी घिचैत चलै छै।
दसो दिशा...।

आगू भलहिं काटि-छाँटि
घटबी घाट बढ़ैत चलै छै।
होइत-हबाइत धकिया-धुकिया
हिस्सा अपन कहबैत चलै छै।
हिस्सा अपन कहबैत चलै छै।
दसो दिशा.....।

अपने हिस्से नाचि-नाचि
अपने गीत सुनैत रहै छै।
अपन-अपन अपना-अपना
मंच जिनगीक मचैत रहै छै।
मंच जिनगीक मचैत रहै छै।
दसो दिशा...।
❍

धर्मक फूल...

धर्मक फूल फुलेबे करतै
बनि फुलबाड़ी सजबे करतै
धर्मक फूल...।

सान धार बनेबे करतै
काम-धाम सजेबे करतै।
भीड़-कुभीड़ किछुओ ने बूझि
असंख्य-शंख बजेबै करतै।
धर्मक फूल...।

धड़ घनेरो धार घनेरो
रूप कृष्ण कहेबे करतै
बान पकड़ि वाणी बदलि
निसाँस-साँस भरेबे करतै।
निसाँस-साँस भरेबे करतै।
बनि फुलबाड़ी सजबे करतै।
धर्मक फूल...।

बनि फुलवाड़ी फूल सजि-जसि
माला फूल बनेबे करतै
हजार हाथ नाओं हजार
सहस्त्र बाढ़नि कहेबे करतै।
मीत यौ, सहस्त्र बाढ़नि...।

करु-पाण्डु बीच सदए
नाद-शंख बजेबे करतै
जय-पराजय गढ़नि गढ़ि
भारत-महाभारत रचेबे करतै।
मीत यौ, भारत-महाभारत रचेबे करतै।
धर्मक फूल...।



किछु ने करै छी...

किछु ने करै छी, मीत यौ
किछु ने करै छी।
मीत यौ किछु ने करै छी।

गेड़ू चौक मारि गनगुआरि
दिन-राति रमि रमल रहै छी
अथबल बनि आस-असरा
सभ किछु तियागि रहल छी
किछु ने करै छी।

जरि मरि गेल मन-कामना
तैयो देखि-देखि देखै छी
भेस बदलि भँसि-भँसिया
समए देखि भखैत रहै छी।
मीत यौ, किछु ने करै छी।

बोनक बाट आगू पड़ै छै
उत्तरे-दछिने धार बहल छै
घटि-घटि घटिया घाट बनि
घोंटे-घोट पीबैत रहै छी
मीत यौ...।

ससरि-ससरि ससरैत
गाछ धरती धड़ै छी
धरतीमे धरिया धरिया
लक्ष्मी-नाग कहबैत रहै छी
मीत यौ...।
❍

अपने पाछू...

अपने पाछू बौआइत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू बौआइत रहै छी।
दिन-राति ढहनाइत रहै छी
राति-दिन गनहाइत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू...।

पछुआ बनि पछुआर पहुँचिते
पेट-पीठ, पाँजर देखै छी
हड्डी छाती छिटैक-सिहकि
पौंखड़ा बनि सूर-तान भरै छी
पौंखड़ा बनि सूर-तान भरै छी
मीत यौ, अपने पाछू...।

जूआ-जुआ, जूआ-जुआ
नांगड़ि अँठि चलैत रहै छी
लादक ऊपर लादि-लादि
टूटि-टूटि गीरह बनैत रहै छी
टूटि-टूटि गीरह बनैत रहै छी
मीत यौ, अपने पाछू...।

अपनाकेँ अप्पन बूझि-बूझि
अपने पाछू ओझराएल रहै छी
अपनापन भाव बिनु बुझितो
अगू-पाछू नचैत रहै छी।
अगू-पाछू नचैत रहै छी।
मीत यौ, अपने पाछू...।
❍

उठी-बैसी...

हमर तेही मे नाम, हमर तेही मे नाम।
हमरा उठलेसँ काम, हमर बैसलेसँ काम
हमर तेहीमे नाम...।

उठी लेब कि बैठी, बाजू-बाजू धड़-धड़ाम
उठी लऽ जँ बैसब, आ कि बैठी लऽ जँ उठब
छुबिते भरब पद पराम
हमर तेहीमे नाम, हमर तेहीमे काम।

खेल खेलाड़ी खेलि खेल
बाल-बोध लिखबै छै नाम
खेल जिनगीक खेला-खेला
मृत-अमृत पबै सूरधाम।
हमर तेहीमे नाम हमर तेहीमे काम
हमरा उठले से काम, हमरा बैसले सँ काम।
❍

गर-मुड़...

गर-मुड़ बोझ बनल छै
मीत यौ, गर-मुड़ बोझ बनल छै।
पेब धार साबे जेना
बाणिक बानि धड़ैत रहै छै
कोमल-किसलय किछु ने बूझि
पछुआ रूप धड़ैत रहै छै।
गर-मुड़...।

तहक-तह तहिया-तहियासँ
छल-छल छल्ली बनैत रहै छै
समटनिहार संगी जहिया जेहेन
तेहने तहिया बोझ बनै छै।
गर-मुड़...।

गर-मुड़ ठानि बानि पकड़ि
गर-मुड़ चालि चलैत रहै छै।
गर-मुड़ बटगमनी गाबि
कोइली तान भरैत रहै छै।
कोइली तान भरैत रहै छै।
गर-मुड़...।
❍

मनक बेथा...

मनक बेथा कहब केकरा हे बहिना
सभ दिनसँ होइते एलै।

बनि-बनि बेथा कथा बनि-बनि
मरण-करण बनिते एलै।
मृत-अमृत रगड़ि-रगड़ि
दिन-राति कहिते एलै।
मनक बेथा...।

खरहा बनि-बनि कथा-पिहानी
राति-दिन भूकिते एलै।
पेट वायु जहिना भूकै छै
खेरहा खरही कहिते एलै।
मनक बेथा...।

मोटरी मोटा माथ चढ़ि-चढ़ि
ठोह फाड़ि कनिते एलै।
कूहि-कूहि, कुहरि-कुहरि
आदिएसँ कहिते एलै।

मुदा आदि-अंत दुनू सहोदर
सभ दिनसँ होइते एलै।
आगूओ हेतै, आइओ हेतै।
दिशा दसो कहिते एलै।
मनक बेथा...।
❍

रहल नै...

रहल नै तकनिहार मीत यौ
नै रहल तकनाहार।
तकतियान अपने सिर चढ़ि-मढ़ि
रहल नै देखिनिहार, मीत यौ
रहल नै...।

रहल सभ दिन ताक तकैमे
धाक अपन पकड़ैपर।
जमिते धाक धकेल-धकेल
ठेल ठेल ठेलिया ठेलैपर
मीत यौ, ठेल ठेलि ठेलिया ठेलि
रहल नै...।

ठेल-ठेल ठेलि ठेलिया
ठेला ठाला बनबैपर।
ठेल पटै रगड़ि-रगड़ि
रंग स्वरूप बदलैपर
मीत यौ, रंग स्वरूप बदलैपर
रहल नै...।

हेरि-हेर, हरणि हरण
अबैत रहल बनि-बनि अन्हार
घेरा-घेरि घेड़ा बान्हि-बान्हि
पटकि बैस छातीपर।
मीत यौ, पटकि बैस छातीपर।
रहल नै...।
❍

पकड़ि समए...

पकड़ि समए संकल्प नै ठानब
गति कर्म पेबै केना?
बिनु बूझल बिनु बूलि बटोही
घन-सघन बुझैत जेना।
पकड़ि समए...।

ओर-छोड़ पकड़ि-पकड़ि
काम-कर्म पहुँचै जेना छै
संग श्रम-समए मिलि तहिना
सुफल-फल पाबै तेना छै।
पकड़ि समए...।

संगम बीच श्रम ओ समए
खुशी-खुश खुशिआइ जेना छै
पाबि संग संकल्प तहिना
धर्म-कर्म सिरजैत चलै छै।
पकड़ि समए...।

गनगनाइत कर्म गमगमाइत तहिना
सागर-झील टपबे करै छै।
झील-झिलहोरि सरोवर तहिना
जिनगीक हेल-हेलबे करै छै।
पकड़ि समए...।


सतरंग ऐ...

सतरंग ऐ संसारमे
समरस रंग धड़ैत रहै छै।
धार-कोन अन्हार-बिहाड़ि
राति-दिन पेबैत रहै छै।
राति-दिन पेबैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

कहि सुलक्षण बनि कुलक्षण
घटिया घाट घटैत रहै छै।
जुआ जोति पछुआ पकड़ि
दब-उनार करैत रहै छै।
दब-उनार करैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

सिनेह सिनेहिल सहटि-बहटि
गारा-जोड़ करैत रहै छै।
सिरजमान होइए जेतए
काँट-गुलाब हँसैत रहै छै।
काँट-गुलाब हँसैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।

संग मिलि मधु डंक जेना
सूर-तान भरैत रहै छै।
रानी-बीच मधुरानी तहिना
मधुपान करबैत रहै छै।
मधुपान करबैत रहै छै।
सतरंग ऐ...।
❍

दुनियाँक जेहने...

दुनियाँक जेहने मंच मंचबै,
तेहने ने रंगमंचो बनै छै।
पात्र बनि जेहेन पाट खेलबै
देखिनिहारो तेहने देखै छै।
दुनियाँक जेहने...।

चाहै सभ छै चैन चीत
दुख-भुख दुनियाँ सेहो कहै छै।
सुख सुखाएल सूतल-पड़ल
सिर संजीवनी भेटै कहाँ छै।
सिर संजीवनी भेटै कहाँ छै।
दुनियाँक जेहने...।

हरि अनंत हरि कथा अनंता
हँसि गीत भागवत गबै छै।
हेरि शक्ति शक्ति हरीक
बाघ चढ़ि भगवती कहै छै।
बाघ चढ़ि भगवती कहै छै।
दुनियाँक जेहने...।
❍

चढ़ि अन्हार...

चढ़ि अन्हार पख भरि-भरि
अमवसिया कहबैत अबै छै।
तहिना ने इजोरो बढ़ि-बढ़ि
मास पूर कहबैत चलै छै।
मास पूर कहबैत चलै छै।
चढ़ि अन्हार...।

काटि इजोर कपचि-सपचि
पून प्रकाश पाबैत कहै छै।
खेल जिनगीक खेलाड़ी
चढ़ि-चढ़ि रंगमंच कहैत रहै छै।
चढ़ि-चढ़ि रंगमंच कहैत रहै छै।
चढ़ि अन्हार...।

जस-जसोदा भेद बिनु बुझने
लीला धड़धड़बैत चलै छै।
तीत-मीठ, असाइन-विसाइन
सिर चढ़ि सिरसिरजै छै।
सिर चढ़ि सिरसिरजै छै।
सिर चढ़ि...।
❍

एक विष...

एक विष जहर जहान
जौहरी दोसर जोहि अनै छै।
अजोह सोहि जग-जगा
बीस ज्ञान कहबए लगै छै।
विश्व ज्ञान कहबए लगै छै।
एक विष...।

सुख-दुख संगे संग चलि
पटका-पटकी करैत रहै छै।
अपन-अपन रस्ता पकड़ि
दिन-राति सन्हि मारि करै छै।
दिन-राति सन्हि मारि करै छै।
एक विष...।

निसाँ विष खिस्सा विष
कथा विष बतकथा विष
विसाइत विष विसविसा विसा
देह बिखाह बनबैत रहै छै।
भाय यौ, देह बिखाह बनबैत रहै छै।
एक विष...।
❍

पेटक ताप...

पेटक ताप जहिना तपै छै
तपै छै तहिना मनक ताप।
वेद-पुराण मीलित मिलि-मिलि
एक वरदान दोसर अभिशाप।
पेटक ताप...।

तपैक तप तपस्या जहिना
सभकेँ तपैक अछि दरकार।
बिनु तापे तप केना तड़तै
पेते केना उचित-उपकार।
पेते केना उचित-उपकार।
पेटक ताप...।

विलपि-विलपि भगवत मंगै छै
बीच व्यास भागवत देखै छै।
शक्ति पाबि शालीनी जहिना
सिंह सवार शंख फूकै छै।
सिंह सवार शंख फूकै छै।
पेटक ताप...।

तपिते मनक ताप तरंगि
धार तरंगित हुअए लगै छै।
अकार-धार सकार बनि
सागर गंगा कहबए लगै छै।
सागर गंगा कहबए लगै छै।
पेटक ताप...।
❍

जेहेन मुँह...

जेहेन मुँह तेहेन हँसी
सभ दिन हँसैत एलैए।
मुँहक जेहेन गढ़नि-मढ़नि
तेहने तान भरैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

जाधरि डोर नै बनि-बनि
घास साबे कहबैत एलैए।
बनिते डोरी समेटि-बटोरि
गृह-वास कहबैत एलैए।
गिरह-वास कहबैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

जीह-दाँत सभ संग पूरै छै
आँखि-कान सभ संग एलैए।
लहरि बीच लहरि लहरा
हास-हहास हँसैत एलैए।
हास-हहास हँसैत एलैए।
जेहेन मुँह...।

कनैत-खिजैत सभ सभदिना
जिनगी धारण धड़ैत एलैए।
कननी कानि अदलि-बदलि
जिनगी जीत कहबैत एलैए।
जिनगी जीत कहबैत एलैए।
जेहेन मुँह...।
❍

धार संग नाह...

धार संग नाव तखने चलै छै
धार जलदार बनल रहै छै।
धार जलदार बनल रहै छै।
धार संग...।

देख मानसून लपकि-झपकि
धरा-धार बनबैत रहै छै।
ओद्र आद्र पेब पाबि
मैज-मजैर मोजर धड़ै छै।
मैज-मजैर मोजर धड़ै छै।
धार संग...।

जन-जना मनसून पबै छै
तेना-तेना नाव धार चलै छै।
पूरबा-पछबा झोंक पाबि-पाबि
तेज मन तेजिआ चलै छै।
तेज मन तेजिआ चलै छै।
धार संग...।

गति धार जलधार जहिना
मतियो तहिना मनसून चलै छै।
गति-मति कखनो संग-संग
तँ कखनो झहरैत रहै छै।
तँ कखनो झहरैत रहै छै।
धार संग...।

झैड़-झैड़ झिहीर-झिहीर
झिझिर कोण कोणियाँ खेलै छै।
पकड़ि कोण कोण कोनियाँ
जीत-हारि मनबैत कहै छै।
जीत-हारि मनबैत कहै छै। धार संग...।
❍

मन मशीन...

मन मशीन मंत्रणा करै छै
युग-परिवर्तित हेबे करतै।
सभ दिनसँ होइते एलैए
आगुओ दिन हेबे करतै।
युग परिवर्तित...।

मथि-मथि मन मशीन बनि
तर्ज गीत धड़बे करतै
साधन युक्त परिवार तहिना
धड़धड़ा धार बहबै करतै।
धड़धड़ा धार बहबै करतै।
युग परिवर्तित.....।

एक अलंग मशीन जिनगीक
दोसर नीति कहेबे करतै
नीति-अनीति कुनीति बनिते
एक-सँ-एक लड़ेबे करतै।
एक-सँ-एक लड़ेबे करतै।
युग परिवर्तित...।

कूदि एक जहिना दस बनि
तहिना दस-बीस सेहो कहै छै।
दस दसमुँह रावण जेना
आनन दसानन कहबे करतै
आनन दसानन कहबे करतै।
युग परिवर्तित...।
❍

खट-मीठ...

खट-मीठ बनि-बनि चाट चाटि
सुआद आम केना पेबै यौ
खट-मट खरकैट-खरकैट
चिक्कन केना बनेबै यौ।
चिक्कन केना बनेबै यौ।
सुआद आम...।

तेतरि रोपि तेहेन लगेलौं
गुड़-आम संग पेलौं यौ
रंग बदलि सुआदो बदलि
अपकृत-प्रकृत कहेलौं यौ
सुआद आम...।

जेहने फल पेलौं तेतरिक
तेहने गढ़ि हवा बनेलौं यौ
चर्क-कुष्ट निमंत्रित कऽ कऽ
रोगाएल-मराएल बनेलौं यौ
रोगाएल-मराएल बनेलौं यौ।
सुआद आम...।
❍

झोंकमे...

झोंकमे झोंका गेलौं, मीत यौ
छोड़ि जिनगी उड़िया गेलौं।
झोंकमे...।

पार नै पाबि गुणा-भाग
धन-धरम किछुओ ने पेलौं।
मान-दान घाट घटि-घटि
अपसोचै नहा गेलौं
झोंकमे...।

नै जानि दुनियाँ-दिवाना
भरल दिवाना दुनियाँ पेलौं।
प्रेमी-प्रेम पकड़ि-पकड़ि
अपने तँ किछुओ ने पेलौं।
मीत यौ, झोंमे...।

बिनु प्रेम खाली नै दुनियाँ
राधि-अराधि किछुओ ने पेलौं
मुंडे-मुंडे मति-विमति बीच
सुमैतिए-कुमैत सभठा पेलौं।
सुमैतिए-कुमैत सभठा पेलौं।
मीत यौ, झोंकमे...।
❍

पबिते पैग...

पबिते पैग पिआलिक
घोड़चालि चालि धड़ए लगै छै।
छान-पगहा बीच बन्हि
घोड़छनि चालि चलए लगै छै।
घोड़छनि...।

उठिते दोसर पैग-पग
सिंह-सिंहासन सजबए लगै छै।
कुदैक-कुदैक फानि-फना
फन-फना एतए डुमबए लगै छै।
फन-फना एतए डुमबए लगै छै।
घोड़छनि...।

चढ़ि-चढ़ि डंक डकडका
गद-गधैया पकड़ए लगै छै
ता-थइ, ता-थइ नाच-नाचि
गाम गदह करए लगै छै।
गाम गदह करए लगै छै।
घोड़छनि...।
❍

हेल-मेल जाधरि...

हेल-मेल जाबे नै पकड़ब
जिनगीक कोनो भरोस नै।
रंग-बिरंग सरोवर सगर छै
पार जेबाक संतोष नै।
हेल-मेल...।

कोनो थीर, जलजलाइत कोनो
जुआरि जगल छै सजल-धजल।
पबिते पेट उनटा-पुनटा
देखैए रूप जीलहा-मरल।
हेल-मेल...।

दूर-दूर, हटि-हटि सजल छै
दुर्गम दुर्ग सिरजैत रहै छै।
दुर्ग देख दुखास जेना
कल्प-कल्पना करैत रहै छै।
कल्प-कल्पना करैत रहै छै।
हेल-मेल...।

अन्हर बिहाड़ि उठि उठा
अनहर जाल फेक कहै छै।
इजोत-अन्हार मीलि दुनू
पूनो-अमावस कहि कहै छै।
पूनो-अमावस कहि कहै छै।
हेल-मेल...।
❍

कौशल जखनि...

कौशल जखनि कोसल बनै छै
कोसलिया एबे करतै।
लाख परयास केलो पछाति
ढंस घर हेबे करतै।
कौशल...।

कोसल असगर नै पनपै छै
पनपै छै दोसर-तेसर।
चालि कुचालि धाड़ी-धड़िया
भूमि बनैत रहै छै उसर।
कौशल...।

उसर उस उसरा उजरा
सज्जी नाओं धड़बैत रहै छै।
भूमिक भूमा शक्ति छीनि
उसरा उस गबैत रहै छै।
उसरा उस गबैत रहै छै।
कौशल...।

कोसलिया परिवारो तना
सूखि-सूखि सुखैत रहै छै।
ऊपरे-ऊपरे छीटि अछीनजल
फूकि शंख काल भगबै छै।
फूकि शंख काल भगबै छै।
कौशल...।
❍

उमकीमे उमकि...

उमकीमे उमैक गेलै
भाव भँवर भरैम गेलै।

अबिते उमकी चित-वृत्ति
रमकीमे रमकए लगै छै।
अतल-गहन गहन-अतल
पाबि-पाबि पनिआए लगै छै।
पाबि-पाबि पनिआए लगै छै।
उमकीमे...।

तीले-तील तिलकि-तिलकि।
कौओ बेरागी बनै छै
कल्प-कल्प रमकि झुमकि
अनजनुआ कहबए लगै छै।
अनजनुआ कहबए लगै छै।
उमकीमे...।

उमकि-उमकि लपकि झपकि
लोल-बोल धड़ए लगै छै।
बिनु रंग-रूप बदलनौं
कोकिल स्वर भरए लगै छै।
कोकिल स्वर भरए लगै छै।
उमकीमे...।
❍

जिनगीक कुन्ज...

जिनगीक कुन्ज भवनमे
बिहार कुन्ज करए लगै छै।
दुनियाँक भवसार बीच
भव आनन बनबए लगै छै।
भव आनन बनबए लगै छै।
बिहार कुन्ज...।

आनन-फानन बीच-बीच
हजार आँखि देखैत रहै छै।
सरमे-भरमे चुनि-चुनिया
सागर भव भरैत रहै छै।
सागर भव भरैत रहै छै।
बिहार कुन्ज...।

आँखि बीच अँखिया-अँखिया
डिम्ह डिम्हा भाँगैत रहै छै।
क्षीर-नीर निखड़ि-निखड़ि
घाटे-घाट चुनैत रहै छै।
घाटे-घाट चुनैत रहै छै।
बिहार कुन्ज...।

जेहन आँखि पाँखि तेहन
बास गाछ बनबैत रहै छै।
गाछ-पात फूल फलनि
संग मिलि जीवैत रहै छै।
मिलि संग जीवैत रहै छै।
जिनगीक...।


सत-चित...

सत-चित आनन-फाननमे
भव आनन बिलटि गेलै।
शील बनि शीला चढ़ा
लोढ़ि-बीछि रगड़ए लगलै।
लोढ़ि-बीछि रगड़ए लगलै।
सत-चित...।

वाण-वाणि चेत-अचेत
चाल-चालि चलबए लगलै
बीचमान बनि बिचमानि
नीर-छीर मिलबए लगलै।
दूधे-पानि मिलबए लगलै।
दूधे-पानि मिलबए लगलै।
सत-चित...।

मुख-बिमुख पथ पथरा
गुआरि गर लगबए लगलै।
आनन चित सरि-सरिया
ढुलकि ढोल बजबए लगलै।
ढुलकि ढोल बजबए लगलै।
सत-चित...।


पड़िते पएर...

पड़िते पएर हवा पोखरि
डेगे-डेग डगरए लगै छै।
झील-मिलि, हिल-मिलि हील
पकड़ि बाँहि संगरए लगै छै।
पकड़ि बाँहि संगरए लगै छै।
पड़िते पएर...।

धक्कम-धुक्कम मुक्कम जना
धक्कम-मुक्कम चलए लगै छै
सिहकिते नाद चहकि चिहकि
धरा धार धड़बए लगै छै।
धरा धार धड़ए लगै छै।
पड़िते पएर...।

हिल डोला हिलोरि-हिलोरि
किनछड़ि कोण पकड़ए लगै छै।
तड़पि-तड़पि तड़पन करैत
ठौर अपन घर धड़ए लगै छै।
ठौर अपन घर धड़ए लगै छै।
पड़िते पएर...।


अहाँ किए...

अहाँ किए रूसल छी हे बहिना
अहाँ किए रूसल छी हे।

हल-चल, हल-चल
सभ दिन करै छी
चल-हल चल-हल
कहाँ पेब पबै छी
तैयो अहीं मगन
कानि-हँसि कुचड़ै छी
कानि-हँसि कुचड़ै छी
अहाँ किए...।

राति दिन एकबट्ट बनौने
सभकेँ सभ लागल रहै छी।
लागि भीड़ कियो, भीड़ लागि
रमझौआ करैत रहै छी।
रमझौआ करैत रहै छी।
अहाँ किए...।

राम काम अमृत अमोध
रमझौआ बीच पड़ल रहै छी
झौआ बन बौआ-बौआ
खर्ड़ा बनि खरड़ाइत रहै छी।
बनि खर्ड़ा खरड़ाइत रहै छी।
अहाँ किए...।
❍

घट-घट घोंट...

घट-घट घोंट घोटै छै
मीत यौ, घट-घट घोंट घोटै छै।

तरसैत-तरपैत तनतनाइ छै
तन-फन मन भनभनाइ छै
हक-हका, हकहका कहै छै
अपनमे दरकार धड़ै छै।
अपनमे दरकार धड़ै छै।
घट-घट...।

अपन माइन एकबट्ट मानि
हँसमुँह मन मुस्की भरै छै।
मन-सम्मान, समान मान
तानि छाती समवाण तनै छै।
तानि छाती समवाण तनै छै।
घट-घट...।

जे चिन्हत तेकरे ने चिन्हबै
बीच-बीच बिचमानि बजै छै।
धर्म सनातन ठुमकि-ठुमकि
राति-दिन परिछान करै छै।
राति-दिन परिछान करै छै।
मीत यौ,
घट-घट...।
❍

जहिना बारह...

जहिना बारह दिन बजैत
तहिना ने रातियो कहै छै।
बीच-बिचौबलि बीछि-बेड़ा
दुनूमे समतूल भरै छै।
दुनूमे समतूल भरै छै।
जहिना बारह...।

जेठक बारह नम-नमड़ि
बारह राति पटिअबै छै।
मघजल्ला पसारि-पसारि
हार जाड़ बढ़िअबै छै।
हार जाड़ बढ़िअबै छै।
जहिना बारह...।

कखनो बाम दहिन घुसुकि
दुनू दिस कपचैत रहै छै।
निखरि-निहारि नहि देखि
झपकी-लपकी सहैत रहै छै।
झपकी-लपकी सहैत रहै छै।
जहिना बारह...।



दुनियाँ घोड़ाएल...

दुनियाँ घोड़ाएल छै निसाँमे
घट-घोट घोटैत कहै छै।
सुखचन-दुखचन कुहि-कुहि
भटैक-भटका मारैत रहै छै।
भटैक-भटका मारैत रहै छै।
दुनियाँ घोड़ाएल...।

सुख-चैन सोच-असोच
सूखल धार बहबैत रहै छै।
काँट-कुश बन-बन बना
धार-धड़ि धड़बैत रहै छै।
धार-धड़ि धड़बैत रहै छै।
दुनियाँ घोड़ाएल...।

सूखल-टटाएल रसाएल जिनगी
रसाएल जीव कहबए लगै छै।
भुख-पियास पचि पचा-पचा
सार-वेद गाबैत रहै छै।
सार-वेद गाबैत रहै छै।
दुनियाँ घोड़ाएल...।
❍

बहलि बहील...

बहलि बहील बहिला कहै छै
आश हमर कहियो नै करिहह
फुलकि-फलकि ढेनु-ढेनुआरक
तोड़ि आश तेकरो रहिहह।
तोड़ि आश तेकरो रहिहह।
बहलि बहील...।

बहलि मन दहलि-दहलि
बाँझ गाछ धड़ैत रहै छै।
पकड़ि डारि डोला-डरा
लस्सा लोल छोड़बए लगै छै।
लस्सा लोल छोड़बए लगै छै।
बहलि बहील...।

लटपट-सटपट बझ-बझीन
गीत वधैया गाबि कहै छै।
ता धीन ताधीन धीन ता धीन
सूर तानि टहिआए लगै छै।
सूर तानि टहिआए लगै छै।
बहलि बहील...।


हलचल जिनगी...

हलचल जिनगी हलसि-खिलचि
हर-हरि चालि चलै छै।
बीर्तमान भविष्य कहि-सुनि
भूत-बंगला सजबै छै।
मीत यौ, भूत-बंगला सजबै छै।
हलचल...।

जहिना आनक पोखरि डरान
तहिना गाछी कहै छै।
अधसर-अधमर पोखरि सिरजि
जम-जजमान फुफकारि कहै छै।
मीत यौ, जम-जजमान फुफकारि कहै छै ।
हलचल...।

भाग बैसि एक वीणा-धारणी
बहिना बाँहि पकड़ि कहै छै।
वाम-दहिन चालि चालि-चालि
धाम-काम धड़बए लगै छै।
मीत यौ, धाम-काम धड़बए लगै छै।
हलचल...।


टकटक ताक...

टकटक ताक तकै छी हे मइए
आहाँ किए आँखि मुनने छी।
गड़-गड़ गाल गबै छी मइए
तखनि किए कान खोलने छी।
तखनि किए कान खोलने छी।
टकटक...।

जन-मन-धन धिआनए मइए
छूटि केना के जाइ छी।
डारि-पात अमृत भरि-भरि
विष-रस केना बनैत छी।
विष-रस केना बनैत छी।
टकटक...।

कन-कन मणि मन-मन मइए
अन्हार किए छोड़ैत छी।
रचि अन्हार इजोत-जोत
तखनि एना किए विषविषबै छी।
तखनि किए विषविषबै छी।
टकटक...।


भीख मांगि...

भीख मांगि दुनियाँ भिखारी
दानी शिव कहबै छी यौ।
हे यौ भोलानाथ
दानी शिव कहबै छी यौ।

राति-दिन समैट-समटै छी
भीखमंगा कहबै छी यौ
धड़ि भीख धारा बनै छी
धार भीख बहबै छी यौ
धार भीख...।

शिखर सिर अकुर-सकुर
चोटी सिर पकड़ै छी यौ
धार बनि धरिया-धरिया
पहुँच समुद्र धड़ै छी यौ।
पहुँच समुद्र धड़ै छी यौ।

हे यौ भोला बाबा
पहुँच समुद्र धड़ै छी यौ।
❍

बकरी खुट्टी...

बकरी खुट्टी खुटेस-खुटेस
जिनगीक जिनगी पाठ पढ़ै छै।
कुन्ज भवनमे लाल बिहारी
लीला रचि-रचि रास करै छै।
लीला रचि-रचि रास करै छै।
जिनगीक जिनगी...।

रंग-बिरंगक पात खुआ
रस अमरीत चुसबैत रहै छै।
मनक मक्खन चोरि-छोड़ि
गरदनि बान्ह पड़ैत रहै छै।
मीत यौ, गरदनि बान्ह पड़ैत रहै छै।
जिनगीक जिनगी...।

बीर्त रहितो बकरी जेना
साँढ़-धाकर कहैत रहै छै।
मनहाएल-मनहाएल रहितो
सुरीति रीति सुरैत धड़ै छै।
मीत यौ, सुरीति रीति सुरैत धड़ै छै।
जिनगीक जिनगी...।
❍

अमरा अँचार...

अमरा अँचार चटै छै
मीत यौ, अमरा अँचार चटै छै।

अमौर-मौर बनि बना
अबिते रस बदलै छै।
पानि जीह पाबि पनिया
चहटि चुहुटि धड़ै छै।
चहटि चुहुटि धड़ै छै।
मीत यौ...।

जेहने फड़क रंग-रूप
तेहने ते पातो धेने छै।
नमहर-नमहर गिरह-गैँठ
बिनु गिरहेक डारि पकड़ै छै।
बिनु गिरहेक डारि पकड़ै छै।
मीत यौ...।

चटिते अचार अम अमड़ि
अमरजोत देखए लगै छै।
जीवन जन छोड़ि-मोड़ि
मरण वाणि पकड़ि पेने छै।
मरण वाणि पकड़ि पेने छै।
मीत यौ...।
❍

घरे-घरे...

घरे-घरे ज्योति दीप
गाम अन्हार पड़ल छै।
घरे-घर समाज कहि-कहि
अध-मरल गाम पड़ल छै।
अध-मरल गाम पड़ल छै।
घरे-घरे...।

इतिहास मिथिला कहि-सुनि
पुर जनक धाम बनल छै।
वक्र आठ गीत गबिते
ज्योतिरमान जगल छै।
ज्योतिरमान जगल छै।
घरे-घरे...।

बनि कनियाँ-पुतरा पुतरी
मूक नाच नचैत रहै छै।
राति-दिन एकबट्ट बरहबट बनि
नाचि नाच नचैत रहै छै।
नाचि नाच नचैत रहै छै।
घरे-घरे...।
❍

बेटी किए...

बेटी किए बनेलौं, शिव यौ
बेटी किए बनेलौं।
भूख पेट दुख बनि बना
हमरे किए सजेलौं
हमरे किए सजेलौं
बेटी किए...।

सजि साजि सिर सजा
दोखा जान किए देलौं
किछु ने कामना मनमे ठनने
एहेन किए बनेलौं।
एहेन किए बनेलौं।
बेटी किए...।

मन-मन माली बैसल छै
मालिन किए बनेलौं
मन-मलिन मुँह कानि-कानि
बेटी किए बनेलौं।
हे शिवदानी हे बमभोला
बेटी किए बनेलौं।
बेटी किए...।
❍

मनक भाव...

मनक भाव समेटि-समेटि
मनोभाव पनपए लगै छै।
सुभाव अभाव कुभाव भव
रूप रंग सजबए लगै छै।
रूप रंग सजबए लगै छै।
मनक भाव...।

महकि महि परखि निखारि
भवन भव सिरजए लगै छै।
उक-भाव लपकि लपाक
बिन भावुक सजबए लगै छै।
बिन भावुक सजबए लगै छै।
मनक भाव...।

भाव-भावुक रमैक-चमैक
भाव लोक सिरजए लगै छै।
आनन कानन मानन मानि
भवानन कहबए लगै छै।
भवानन कहबए लगै छै।
मनक भाव...।


सिरजन सिर...

सिरजन सिर पकड़ि-पकड़ि
जड़ि धरती धड़बै छै।
पति-पन पाँति पतिया
उपवन-वन सजबै छै।
भाय यौ, उपवन-वन सजबै छै।
जड़ि धरती...।

सजिते वन उफनि उपनि
धरती धार बहबए लगै छै।
सुध-असुध कहि सुनि-सुनि
घटि-बढ़ि घाट बनबए लगै छै।
भाय यौ, घटि-बढ़ि घाट बनबए लगै छै।
जड़ि धरती...।

कोने-कानी खूटि-खटि
धोबि घाट सेहो बनबै छै।
निरजन, निरमल बसि-बसु
हारि-जीत दुनियाँ कहै छै।
भाय यौ, हारि-जीत दुनियाँ कहै छै।
जड़ि धरती...।


दूधक भूखल...

कनि-कनि कानि कहै छै।
कनी-कनी कान पकड़ि-पकड़ि
कर्ण-अंग धड़ैत रहै छै।
निरलोभ, निसकपट बनि-बनि
अखंड बनि बसैत रहै छै।
अखंड बनि बसैत रहै छै।
कनि-कनि...।

रंग-रंग कनजरि बनि वन
रंग-रंग मुँह धड़ैत रहै छै।
रंग-रंग गुनि गुन सुनि
फलाफल छिटकैत रहै छै।
फलाफल छिटकैत रहै छै।
कनि-कनि...।

जड़ि कोनो फल फलागम
फुलहरि कोनो झड़ैत रहै छै।
जड़ि-जड़ि कनकि-कनकि
कलश-पल्लव भरैत रहै छै।
अपेछित, पल्लव कलश भरैत रहै छै।
कनि-कनि...।


मारी-बेमारी...

मारी-बेमारी के कहए
महामारी बीच पड़ल छै।
के केकरा कहतै-सुनतै
आने-आन धड़ा धड़ छै।
भाय यौ, आने-आन धड़ा धड़ छै।
मारी-बेमारी...।

पानि जरि अगिया आगि
रस रसराज पबै छै।
केकरा कहबै, कहि के सुनतै
खट-रस रस भरल छै।
भाय यौ, खट-रस रस भरल छै।
मारी-बेमारी...।

खट्टर कका केर खटरास
खिया-खिया खरकटाएल छै।
मजनी रगड़ि-रगड़ि खरकिट्टी
सेनुर-सोहाग बुलबुलाएल छै।
भाय यौ, सेनुर-सोहाग बुलबुलाएल छै।
मारी-बेमारी...।
❍